

Chaitanya

Date : 27th March 1974
Place : Mumbai
Type : Public Program
Speech : Hindi
Language

CONTENTS

I Transcript

Hindi	02 - 09
English	-
Marathi	-

II Translation

English	-
Hindi	-
Marathi	-

ORIGINAL TRANSCRIPT

HINDI TALK

Scanned from Hindi Chaitanya Lahari

Vibrations, that is love, that is knowledge, that is joy! पहला शब्द है Vibration, जिसको कि आप लहरियाँ कह सकते हैं, परम कह सकते हैं। जब कोई तार छूती है, इसमें से जो संगीत के तरंग उठते हैं, इसे आप vibrations कह सकते हैं। भाषाओं का बड़ा चक्कर है। बहरहाल भाषा में उसे आप कुछ भी कहें, लेकिन साक्षात् में इसे आप देख सकते हैं। अभी हाल ही में मैं जब लन्दन में थी तो वहाँ पर Electro Microscope से कुछ अणु रेणुओं में, Molecules के फोटोग्राफ T.V. पर वो लोग दिखा रहे थे। उसमें उन्होंने बताया एक sulpherdioxide का रेणु जिसमें कि एक Sulphur का अणु है और दो Oxygen के रेणु हैं, आपस में किसी बाँध से बंधे हुए हैं। आँखों से दिख रहा था, इसका चित्र दिख रहा था। इसके बारे में कोई प्रश्न या भाषा या कोई शंका की बात नहीं है। आप आँखों से देख रहे हैं। इस तरह के तीन बिन्दुओं के बीचोंबीच एक शक्ति दौड़ रही थी मानो जैसे दोनों हाथों से झर-झर, झर-झर कोई चीज जा रही हो, जैसे की Sulphur के दो हाथ हों और वो अपने हाथ से कुछ चीज़ Oxygen की ओर डाल रहे हैं और Oxygen से कुछ चीज़ Sulphur की ओर आ रही है। आप अपनी आँख से देख सकते हैं। लग रहा था हिल रहा है।

और उसके बारे में उन्होंने ये बताया कि तीन तरह के vibrations होते हैं, तीन तरह के तरंग होते हैं, जो किसी भी matter में, किसी भी जल पदार्थ में भी दिखाई देते हैं, ये अब Science ने पता लगाया है और इसके बारे में आदिकाल से ही संसार में बहुत से लोगों ने बताया। ये जो vibrations चल रहे हैं जो कि जड़वस्तु में आपके सामने साफ-साफ नज़र आते हैं, इसके बारे में क्या आप

कोई शंका नहीं कर सकते। जो विदित है जो दिखाई दे रहा है, ये vibrations क्या हैं? एक सल्फरडायाक्साइड के रेणु में जो अनन्त अणु हैं वो किस चीज़ से Viberated हैं, इसमें Vibrations क्या चीज़ है? इसके बारे में Science ने एक शब्द vibrations के सिवा और कुछ नहीं कहा। ऐसे मैंने पहले भी आपसे कहा था कि हमारे हृदय में जो स्पन्दन हो रहा है, इसमें कौन सी शक्ति है, ये अगर डॉक्टरों से पूछा जाए तो सिवा इसके कि ये एक Autonomous Nervous System है, स्वयंचालित एक संस्था के सिवाय कोई भी बात हमारे Doctor लोग नहीं बता सकते। इसका मतलब ये नहीं कि उन्होंने जो खोजा वो ज्ञान नहीं, ज्ञान है लेकिन अधूरा ज्ञान है, बहुत ही अधूरा, छोटा सा, इसका एक अंश मात्र है जिसको कि न्यूटन ने एक बार कहा था। I am like the small child collecting pebbles on the shores of knowledge। न्यूटन जैसे महाज्ञानी तक को यह विचार आ गया था कि मैं अभी बहुत अज्ञानी हूँ, इसी जगह ज्ञान की शुरुआत हो जाती है जब मनुष्य सोचने लगता है कि 'सूरदास की सभी अविद्या दूर करो नन्दलाल।' ये जो vibrations आपको उसमें दिखाई दे रहे हैं उसके बारे में आप कुछ भी नहीं कह पा रहे हैं। क्या मनुष्य का ज्ञान इतना अधूरा है कि हर रेणुओं में, हर अणुओं के बीच में जो तरंग उठ रहे हैं उसके बारे में कुछ भी आप नहीं कह पाए? इसका मतलब ज्ञान तो हुआ ही नहीं। Vibrations जो कि ज्ञान स्वयं हैं, वो ज्ञान है, सम्पूर्ण ज्ञान हर अणु-रेणु अन्दर में स्थित है जैसे मेरी सम्पूर्ण भाषा और ज्ञान जो मेरे मुख से जा रहा है इन दोनों में स्थित है लेकिन ये दोनों मूर्ख इतने अनभिज्ञ हैं कि कौन सा ज्ञान इसमें से गुजर रहा है। हमारे भी अन्दर वही ज्ञान तरंगित है लेकिन हम भी

उसी oxygen और sulphur के रेणुओं जैसे अनभिज्ञ हैं कि हमारे अन्दर कौन सा ज्ञान प्लावित है और किस चीज़ को फिर आप सच मानकर बैठे हुए हैं। और जब कभी कोई भी आदमी उस सत्य की ज़रा सी भी पहचान कराने आता है, तो क्योंकि असत्य में खड़े हैं इसीलिए हम द्वेष में भी खड़े हैं। उस सत्य की झलक मात्र भी कोई आदमी कहने आता है तो उसे हम क्रॉस पर चढ़ा देते हैं या उसको हम murder कर देते हैं, उसको हम खत्म कर देते हैं कि जो वो सत्य है हमारे ऊपर किसी तरह से धो न खुल जाए। इससे भी बचकानापन क्या और हो सकता है? जिस सत्य के कारण स्वयं आनन्द आपके अन्दर में खिलना चाहता है, आपके हृदय में घुसना चाहता है, आपके हृदय में बसना चाहता है, उसी मार्ग को आप अज्ञान में बन्द किए हैं।

अब दूसरी तरह से समझना चाहें तो मैं आपको समझाऊँ कि एक तानपूरा की बात है जिसमें कि उसकी लकड़ी भी है और उसका नीचे का हिस्सा जिसमें कि आवाज़ गुंजती है और ऊपर में उसके तार हैं। जब तक उंगलियाँ तार को नहीं छेड़ेंगी तब तक कोई भी संगीत तैयार होने वाला नहीं, उसमें से संगीत सुनाई देने वाला नहीं। लेकिन उंगलियाँ तार पे नहीं हैं, हमारा चित्त उस तार पे नहीं है जिससे आनन्द की उपलब्धि होती है, हमारा चित्त उस तानपूरे पर है जो ये शरीर, मन, बुद्धि, अहंकार आदि है। उस तार पे जब तक आपकी उंगली छिड़ेगी नहीं आपको किसी भी चीज़ से आनन्द की उपलब्धि हो नहीं सकती। आप संसार की कोई सी भी चीज़ ढूँढ़ डालिए, जो भी आपकी आजतक युगों से खोज है, वो सारी ही खोजें आप कर डालिए, लेकिन आनन्द की उपलब्धि तभी होगी जब सहज में ही आप उन तारों को छेड़ देंगे जिससे कि संगीत उत्पन्न होता है। उस तारों की

खोज दूर ही से हो रही है। जैसे कि मैंने आपसे कहा कि Sulpherdioxide के एक रेणु के अन्दर उसके अणु के अन्दर से vibrations हैं ये वही संगीत के तार हैं जिनकी मैं बात कर रही हूँ और वही vibrations आपके अन्दर से भी बह सकते हैं और फूट कर के उस कार्य को पूरा कर सकते हैं जिसके लिए आप संसार में आप मनुष्य रूपेण आए और अहंकार आदि चीज़ों से सब अलंकृत किए गए।

और अन्त में उस संगीत के आप धुनी बने। बड़ा संगीत का सारा साज सजाया गया था, सब बड़े सुन्दरता से जतन करके जमाया गया रंग, लेकिन तार को छेड़ने वाला गुर नहीं मिलेगा तो संगीत कैसे उत्पन्न हो सकता है? इसीलिए संसार में कहीं भी, जहाँ कि बड़ी अमीरी भी है, जहाँ पर लोग बड़े बलिष्ठ हैं, जहाँ बड़े सत्तावान लोग बैठे हैं, आनन्द मैंने कहीं नहीं देखा। और न आप ही पाइयेगा कि किसी के अन्दर वो आनन्द की उपलब्धि है। कारण उसका एक ही है कि वो तार जिससे कि आनन्द, की उपलब्धि होती है आपके हाथ नहीं लगा है और उसका कारण ये है क्योंकि वो किसी आकार प्रकार में या किसी विशेष स्वरूप में नहीं होता। इसका कोई भी स्वरूप नहीं है। ये एक energy जैसा है, गुर आप कल बिजली को पकड़ सकते हैं तो उसे भी पकड़ सकते हैं। लेकिन आप बिजली को नहीं पकड़ते, उसी तरह से आप उसे नहीं पकड़ सकते हालांकि वो आपके अन्दर है, आपके हृदय में स्पन्दित है, आपके जितने भी स्वयंचालित कार्य हैं- शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, सब वही करता है और वही आपको अपनी ओर खींच रहा है। उसे जानना हमारे लिए परम आवश्यक ही नहीं किन्तु परम जीवन का लक्ष्य मात्र है। जब तक संसार इस चीज़ को सोचेगा

नहीं, जब तक इस ओर पूरी तरह से दृष्टि नहीं डालेगा तब तक संसार का कोई सा भी प्रश्न ठीक नहीं होगा। अभी लन्दन में भी मेरी कुछ लोगों से बातचीत हुई, अजीब-अजीब लोग बातें पूछते हैं। एक साहब पूछने लग गए कि वियतनाम में इतने लोग मर रहे हैं और आप अपना सहजयोग लेकर बैठे हैं! मैंने कहा, बहरहाल आपके बड़बड़ाने से वियतनाम का वार नहीं ठहरने वाला। कहने लगा आपके ऊपर गुर कोई बन्दूक लेकर आए और आपको मार डाले तो आप क्या करिएगा? मैंने कहा पहले आप बन्दूक तो लेकर आने दीजिए। इस vibration की शक्ति अभी तक किसी ने आजमाई नहीं। हमारे सामने तो ऐसे ही कोई ज़रा सा भी कोई पिस्तौल लेकर आए तो थर-थर काँपकर के उसके हाथ मुँह दबदबाने लगते हैं! आपमें से बहुत सों ने देखा है।

प्रेम की शक्ति को किसी ने आजमाया ही नहीं, और गर प्रेम की बात करो तो लोग उसे हवाई बात समझते हैं हालाँकि अणु-रेणु और हरेक मनुष्य के हृदय के हरेक स्पन्दन में ही उसकी शक्ति कार्य करती है। प्रेम ही एक शक्ति है जो सारी सृष्टि की रचना, सृजन, सारा कार्य करती है। इसी प्रेम की शक्ति को लोग Divine कहते हैं। नाम कुछ भी दीजिए, इसको समझने की बात है, हिन्दुस्तान में शंकराचार्य ने बहुत साफ-साफ इस बात की गर्जना करके और घोषणा करके कहा था, “इन्हीं चैतन्य लहरियों का आना ही परमात्मा का पाना है और उसी से मनुष्य उस परमात्मा के हाथ का साधन बनकर के संसार का कार्य उस तरह से करते रहता है जैसे कोई एक साक्षी हो Witness हो। लेकिन शंकराचार्य को कौन पढ़ते हैं?

Modern आदमी की बड़ी विचित्र दशा है! जब तक धर्म में अधर्म न लिखा जाए मनुष्य धर्म

की किताब नहीं पढ़ता। कितनी विचित्र सी बात है! जब तक Sex लिखा न जाए तक तक वह धर्म की बात नहीं सुनता। Sex का और धर्म का कोई भी सम्बन्ध नहीं है। चाहे वो आज हो, चाहे अनादिकाल तक भी मनुष्य इस बात को न भी माने, समझे भी नहीं, उसके लिए कुछ भी कहे, Sex का और धर्म का कोई भी सम्बन्ध नहीं है। ये हम सिद्ध करके आपको दिखा सकते हैं, अगर आप किसी भी हमारे प्रोग्राम में आएँ। इस कुण्डलिनी की जागृति Sex से सम्बन्धित है ही नहीं। उल्टे Sex जब छोटे बच्चे जैसे हो जाता है, तभी कुण्डलिनी आपकी माँ जागृत होती हैं। इस तरह से कलयुग में एक विचित्र सा confusion है। उस वक्त में vibrations का देखा जाना कम से कम इशारा तो इस ओर करता ही है कि मनुष्य चाहे कितनी भी डींग मारे वह बहुत कम ही जान पाया है। बहुत ही थोड़ा जान पाया है। बहुत ही थोड़ा। और जो नहीं जान पाया उसको सब उसने नाम दे दिए हैं बड़े बड़े। जैसे कि मैंने आपसे कहा कि vibrations, कहीं इसे कहता है कि स्वयंचालित संस्था, और कहीं वो कहता है कि universal unconscious।

संसार के सारे ही प्रश्न सहजयोग से ही छूट सकते हैं। ये कहने पर भी लोग बहुत नाराज हो जाते हैं कि माताजी ने ऐसे कैसे कहा। लेकिन जो शक्ति सारे संसार को चलाती है, जो vibrations हरेक अणु, रेणुओं में प्लावित है, उसको गुर आप जान लें, वो आपके हाथ में से बहने लग जाएँ, उसपे गुर आप mastery कर लें, तब आपके लिए क्या असम्भव कोई बात है? मनुष्य शक्ति का पुजारी है, वो चाहता है कि हाँ गुर मेरे अन्दर शक्ति आ रही है तो मैं सहजयोग करूँगा, उसे कुछ बदला चाहिए। असल में आपके अन्दर तो शक्ति है ही, लेकिन वो कुण्ठित है। उसको स्वतन्त्रता

दे देना, उसको liberate करना, यही कार्य सहजयोग करता है। यही liberation है, यही मुक्ति है, जिसके बारे में हजारों किताबें मनुष्य ने लिख दीं। ये बहुत अज्ञानी किताबें हैं, बहुत सारी अज्ञानियों की किताबें हैं। ज्ञान की किताबें तो वो हैं जोकि रोजमर्रा, हर जगह हमें जरूर देखने को मिलें और उसका proof मिले। अज्ञान ही संसार में भरा दिखाई देता है।

जब मनुष्य को ज्ञान होता है, सिर्फ एक ही ज्ञान कि 'मैं कौन हूँ' मैं किस शक्ति से बना हुआ हूँ और किस शक्ति में मैं स्थित हूँ' तो एकदम से उसका अन्तर्मन बदल जाएगा। उसकी स्थिति बदल जाती है, उसका तरीका बदल जाता है। और जिसे वो दुख समझता है, जिससे वो घबराकर भाग रहा है, वो असलियत में वास्तविकता उसके लिए बड़ी सुन्दर हो जाती है। सिर्फ ये vibrations हमारे अन्दर से बह निकलें उसके बाद इन्हीं vibrations से आप जान सकते हैं, knowledge आ सकता है कि दूसरा आदमी क्या है। इसी से शुरू करें। दूसरा आदमी क्या है? आप कोई realized आदमी आता है, छोटे बच्चे आते हैं दो-दो साल के बच्चे जो पार हो जाते हैं, जिन्हें हम कहते हैं जिनके अन्दर से vibrations बहना शुरू हो जाते हैं। वो किसी भी इन्सान की ओर जब हाथ करते हैं तो बताएंगे कि हमारे इस उंगली में जलन है। अब गुर उस आदमी से पूछिए हैं कि आपको Heart Trouble है, कहने लगा हाँ भई हमें Heart Trouble है। यह हृदय चक्र की निशानी है, इसकी गवाही यहाँ बैठे हुए हैं कम से कम पचास फीसदी आदमी दे सकते हैं। बिल्कुल सही बात है। आप उंगलियों से उन्हें जान सकते हैं, छोटे बच्चे तक जान सकते हैं, कोई गुर आदमी आ जाए, आप फौरन बता सकते हैं कि ये आदमी किस दशा में है, इसके कौन से चक्र पकड़े हुए हैं, कौन

से Centres पकड़े हैं जो हमारे अन्दर हैं, जिन्हें हम दिखा सकते हैं आपको, पर आप हमारे ध्यान में कभी आएँ। इतना समय गर आपको मिल जाए, आप बड़े busy लोग हैं तो आप जान सकते हैं कि इन्हीं उंगलियों के ऊपर आप दूसरों को परख सकते हैं और जान सकते हैं कि कौन सन्त है, कौन असन्त है, कौन दुष्ट है कौन महादुष्ट है, कौन राक्षस है। यही knowledge कोई साहब आए बड़े अच्छे कपड़े पहनकर के आ गए, साधु महात्मा बनकर आ गए, आपसे मीठी बातें करी, 'भई मैं तो तुमसे प्रेम करता हूँ।' वाद में आपने पता देखा कि कितनी गटी कट गई ये तो समझ में आया नहीं, वैसे तो बड़े अच्छे लग रहे थे, बड़े साधु लग रहे थे, मुँह से बड़े भोले भाले लग रहे थे लेकिन हमारी तो गर्दन काट गए। मनुष्य के बारे में अपने ही मनुष्य और मनुष्य के बीच में कोई आपस में ज्ञान नहीं है। हालाँकि अधिकतर मानव बहुत सुन्दर, अत्यन्त गौरवशाली, जैसे कि बाग में कलियाँ हों और अभी खिली नहीं हों और कोई समझता ही नहीं कि इस बाग में कितनी बहार है।

जब ये vibrations आपके अन्दर से छूट पड़ते हैं, और जब आप दूसरों पर हाथ रखकर देखते हैं तो मजा आता है आपको। आपको मजा आता है, आप देखते हैं, आ हा हा हा, आ हा हा हा। कितना! लोग बताते हैं ये तो ऐसा आदमी है किसी से बात ही नहीं करता, अजीब सा आदमी है! नहीं नहीं, इसके अन्दर देखो, कितना सुन्दर है! आपस में सुगंध, एक संगीत, देखने योग्य होता है, मजा आता है इन्सान से। हालाँकि हम इन्सान से भागते रहते हैं सुबह से शाम तक, इन्सान-इन्सान से भागता रहता है सुबह से शाम तक। क्या अजीब हालत है! जो आदमी जानकार है, उसको तो कभी-कभी ऐसा भी लग सकता है कि अजीब

पागलखाने में आए हैं! सब एक अज्ञान ही से सारा मनुष्य इतना अन्जान है उस आनन्द से जिसे परमात्मा ने बनाया है। एक सहजयोग ऐसी चीज़ है, ऐसा एक तरीका है जो परमात्मा का अपना तरीका है, जिसके कारण आपके हाथ में से ये vibrations बहने लग जाते हैं, पाँव में से बहने लग जाते हैं। सारे शरीर में से बहने लग जाते हैं, जैसे सूर्य का प्रकाश हो और दूसरों के अन्दर जाके, उसके प्रेम को भी जगा करके उसमें भी वो गति दे सकते हैं कि उसके भी अन्दर से वो बहने लग जाएँ और एक तरह की chain reaction सी बना दें।

लेकिन हजारों दीप जलाने के लिए पहले दीप तो सच्चे हों। आप सिर्फ दीप मात्र हैं, आप ये जान लीजिए, और आप कुछ भी नहीं है, जिससे कि संसार में उजियारा हो और आपके अन्दर वो बात भी है जिससे कि दीप जलना है। लेकिन गुरु आप मुँह मोड़ कर बैठे हुए हैं तो उसे कौन क्या कह सकता है? हमारा कितना भी द्वेष, इस देश की तो विशेषता है, इस देश की तो विशेषता ही विद्वेष है। किसी का कुछ अच्छा भी अच्छा नहीं लगता, बहुत ही अजीब सी बात लगती है। किसी के घर में गुरु फूल खिले हैं तो हमें अच्छा नहीं लगता है पर किसी के घर में आके कोई गोबर डाल दे तो हमें अच्छा लगता है! कैसा मनुष्य विचित्र है! आप ही बताइए, किसी के घर में गुरु फूल खिले हैं तो आपको भी तो सुगन्ध आएगी, आपकी भी तो हवा सुगन्धित हो जाएगी। विद्वेष के कारण ही हम इस ज्ञान से अधूरे रहे हैं।

हमारे अन्दर के जो तरंग हैं, वो हमें प्यार सिखाने के लिए आए हैं प्यार देने के लिए आए हैं और हमारा जो प्यार है उसे संसार में फैलाने के लिए आए हैं। प्यार का ही साम्राज्य लाने के लिए संसार में ये हृदय हम लोगों के धड़क रहे हैं, नहीं

तो परमात्मा को कोई धन्धा नहीं था जो इस तरह के अज्ञानी लोग को पैदा कर दिए? क्या उनको अक्ल नहीं थी जो इस तरह के महामूर्खों को पैदा कर दिया जो अपने ही वो थे? और जब ये ज्ञान हो जाता है, एक बात पता हो जाती है, एक बात जो बड़ी सच्ची बात है, परम सत्य की एक बात समझ में आ जाती है कि अरे जो हमारे अन्दर स्पन्दित है वही दूसरे के अन्दर स्पन्दित है, और जो हमारे अन्दर से vibrations बह रहे हैं वही दूसरों के अन्दर अकुला रहे हैं फूटने के लिए और बहने के लिए और ये जाना जाता है आपके हाथ पर, अंगुलियों पर और आपकी रीढ़ की हड्डी पर। फिर आप खुलते हैं, आपके सर पे।

मनुष्य को एक नए आयाम में उतरना है और उसकी व्यवस्था भी हो गई, लेकिन महज इसलिए कि मैं आपके सामने बम्बई में बोल रही हूँ और कोई मैं बहुत बड़ी भारी लीडराने वतन नहीं हूँ, या फिर मेरे दो सींग नहीं लगे हुए हैं जिससे मेरी बात न सुनी जाए। सारे ही संसार का प्रश्न हठात से एक पल में ही पार हो सकता है गुरु सारा संसार सहजयोग को मानने लगे, लेकिन वो तो बड़ी कठिन बात नजर आ रही है अभी फिलहाल। लेकिन कम से कम आप लोग जो यहाँ थोड़े जो भी लोग हैं, आप ही लोग पार हो लें। और कुछ करना नहीं है, सहज में, आपही के साथ पैदा हुए कुण्डलिनी योग के बारे में मैं कल बताने वाली हूँ। कुण्डलिनी क्या है, ये भी अज्ञान ही है जब तक उस स्पन्दन में देख के न समझें ये भी अज्ञान है।

इस प्रेम की शक्ति को गुरु अपनाना है, एक चीज़ जरूर होना चाहिए, जिसको अबोधिता कहते हैं, innocence। आदमी गुरु innocent नहीं हो तो कुण्डलिनी माताजी उठती नहीं। आप ऊपर से बड़े शरीफ आदमी होंगे, दुनिया में आपका बड़ा

नाम होगा, आपके बहुत फोटों छपे होंगे, या आप बड़े भारी साधु महात्मा होंगे, आपको लोग भगवान करके पूजते होंगे, लेकिन कुण्डलिनी माता जो हैं वो उठने वाली नहीं है। क्या करें हम? उसने तो द्वार पर श्री गणेश को बिठाया हुआ है जो स्वयं innocence ही हैं। या मैं इतना भी कहूँ कि ये जो vibrations हैं, ये अगर प्यार है तो innocence है। आदमी को थोड़े innocence की जरूरत है। लोग मुझसे पूछते हैं कि माताजी क्या करना चाहिए? मैंने कहा कुछ नहीं, आपमें innocence कितना है उसको ज़रा नाप लीजिए। उसको ज़रा तोल लीजिए कि आपके बदन में innocence कितना है और चालाकी कितनी है? इसका नाप-तोल थोड़ा सा हो जाए, और आप ही की भलाई के लिए आपका Bank Balance है। आप हमेशा अपना Bank Balance नाप लेते हैं कि कितना है, कितना नहीं है। और उसी के अनुसार आप कार्य प्रवीण होते हैं और उसी के अनुसार आपमें अहंकार वगैरा आदि आते हैं और सहजयोग में जितना innocence आपका जीता होगा, जन्म जन्मान्तर का, वो cash हो जाएगा। खट से ऐसे-ऐसे लोग जो देखते ही साध खट से पार हो जाते हैं और चार-चार साल से भी लोग रगड़ रहे हैं। कुछ न कुछ, ऐसी बात नहीं है कि आप कोई बुरे आदमी हैं, बुरा तो कोई भी मैंने देखा नहीं खास। जो यहाँ आते हैं कोई बुरे आदमी थोड़े ही न होंगे। लेकिन एक बात है, आप थोड़ी चालाकी खेल रहे हैं। चालाकी से परमात्मा नहीं जाना जाएगा, चालाकी मनुष्य की Policy है। अपने innocence को नाप लें। अब इसका कोई नाप नहीं, इसका कोई मापदण्ड नहीं। आप ही अपना जान सकते हैं कोई तो और जान नहीं सकते। इसीलिए छोटे बच्चे खट से पार हो जाते हैं और पार होने के बाद में खुद ही खड़े होकर कहते हैं, हाँ माँ आ रहा है। इनको

ठण्डा आ रहा है, इनको गर्म आ रहा है। हमारे यहाँ हमारी एक नातिन है दो साल की है। कोई भी ऐसा वैसा आता है तो घण्टी बजाने लग जाती है फौरन, एक घण्टी ले कर रखी हुई है। ये आ गई है। और हम जान जाते थे कि इनको गर्मी लगती है, तकलीफ होती है। इसके बारे में आपको इन्होंने गाना सुनाया था, बहुत बड़ी चीज़ है वो, बहुत बड़ी चीज़ है। संसार में आए हो संसार का कल्याण करने के लिए, उनके विचारों के जल-जल के हाथ अन्दर चले गए, पैर जल जलकर के अन्दर चले गए, ऐसे लोगों को तकलीफ कितनी है राक्षसों से, दुष्टों से। जो innocent लोग हैं, क्राइस्ट जैसे आदमी को crucify कर दिया, मोहम्मद साहब जैसे आदमी को Murder कर दिया, किसको नहीं सताया इन दुष्टों ने? आप उनके साथ हैं या अपने innocence के साथ हैं।'

आप अपने बच्चों के लिए कम से कम सोचिए कि इनके लिए आप क्या देना चाहते हैं? कौन सी दुनिया उनके लिए आप बना करके जा रहे हैं, उनके लिए कौन सा विधान आपने सोचा हुआ है? या तो इतिहास में यही जाएगा कि आप ही के समय में सहजयोग आया था और आप लोगों ने इसे अपनाया नहीं। जबकि आपको कुछ भी देना नहीं, आप दे ही नहीं सकते हमें कुछ। आप लोग receiving end पर बैठे हैं, आप हमें क्या दीजिएगा? ये जान लीजिए कि आप हमें प्यार भी नहीं दे सकते। वजह ये है कि आपका अभी प्यार ही कम है। पहले प्यार को जगा लीजिए अपने अन्दर तब आप और हममें अन्तर ही क्या रहेगा जो लेना-देना बना रहेगा? देना कुछ भी नहीं, सिर्फ लेने की तैयारी चाहिए, जैसे गंगा कितनी भी ज़ोर से क्यों न बह रही हो, आपके दरवाज़े से ही क्यों न बह रही हो, और आप ग़र उसमें पत्थर डाल दें तो पत्थर

क्या उसमें से पानी लेगा? उसके लिए गागर तो चाहिए होगी न। और गागर भी बनेगी सिर्फ innocence से ही, एक ही चीज़ थोड़ा सा ठग लीजिए अपने को, कोई हर्ज नहीं। आप ठग गए तो कुछ नहीं जाने वाला, संसार की कोई सी भी चीज़ आपके साथ नहीं जाने वाली, शिवाय आपके innocence के। अपने innocence को बनाए रखिए। जो लोग बड़े अपने को होशियार समझते हैं, सबसे ज्यादा ठगे गए हैं क्योंकि जो मूल्यवान है उसे खोकर के ये पत्थर मिट्टी इकट्ठे कर लें।

आज भी थोड़ा सा प्रयोग करने का विचार था सबका ही। आप लोग भी आए हैं, कल सोच रहे हैं साढ़े आठ बजे भारतीय विद्या भवन में Meditation फिर से होगा, लेकिन थोड़े लोग तो बैठे हैं, हम चाहते हैं कि बातचीत से कुछ होना नहीं है, पा लीजिए। गर कुछ बनना हो तो बन जाएगा। लेकिन पाने के बाद भी हम देखते हैं कि बहुत से लोग अपने घर में बैठ गए, मेरे पास इतनी इतना चिट्ठियां लंदन में आती हैं कि माताजी आपने तो हमारा 'कल्याण कर दिया, हमें तो बड़ा आनन्द आ गया, हमारा तो ऐसा हो गया, बस। इससे आगे?

क्या दीप इसलिए जलाए जाते हैं कि वो टेबल के नीचे रख दीजिए? पार होने के बाद आपको समझ लेना चाहिए कि आप चुने गए हैं। आप प्रतीक हैं उस प्रकाश के जो संसार को प्रकाशित करेगा। अपनी छोटी-छोटी मर्यादाएं छोड़कर के उसके आनन्द के क्षण जो आपको मिले हैं, ये छोड़कर के खुले में आइए और संसार के लिए प्रकाश दीजिए। यही आप दे सकते हैं, सहजयोग का देना यही है और बाकी कुछ भी नहीं। परसों के दिन मैं उस विषय पर बात करने वाली हूँ जिसके बारे में बहुत सारी भ्रान्तियां संसार में फैली हुई हैं लेकिन महान अज्ञान है जिसे कि हम परलोक विद्या

आदि कहते हैं और अंग्रेजी में इसे psychology, subconscious....., subconscious! इसका लोग किस तरह से उपयोग करते हैं और किस तरह से लोगों को भरमाते हैं और इसकी कौनसी कौनसी पहचाने हैं, इसके बारे में मैं आपको बताऊंगी। इस तरह से तीन दिन यहाँ पर इन लोगों का विचार है। जितना हमने इस जन्म में खोलकर कहा है पहले कभी भी नहीं कहा। उस समय तो समझदार ही नहीं थे कि किसी से कहा जाए। फिर भी गोप से गोपनीय बात भी हम खोलकर कह रहे हैं, इसलिए कि मनुष्य बाद में ये न कहे कि हमें पता नहीं था नहीं तो हम रुक जाते। मेरी पूरी बात को आप सिर्फ सुन रहे हैं, जानना तभी होगा जब आप पार होंगे।

कुछ प्रश्न हो तो पूछ लीजिए क्योंकि प्रश्न बहुत होते हैं, अजीब अजीब से और वो ध्यान के वक्त में सामने आते हैं। एक दो मैं आप ही को बता दूँ जो हमेशा लोग पूछते हैं कि ऐसे कैसे कि इतनी जल्दी लोग पार हो जाएं? ऐसा प्रश्न बहुत लोगों ने किया। हर जगह होता है। ऐसे कैसे हो सकता है एक क्षण में? क्यों नहीं हो सकता है, ऐसा आप लोग क्यों नहीं सोचते? जैसे चन्द्रमा पे ऐसे कैसे कि मनुष्य वहाँ पहुँच गया? हमारी दादी से जाकर बताओ तो अब भी विश्वास नहीं करेंगी। कोई चन्द्रमा पर जब पहुँच सकता है तो चैतन्य पर भी तो कोई पहुँच ही सकता है। कोई Discovery तो हो ही सकती है संसार में। अगर कोई चीज़ का पता चला है तो उसको कमसकम आजमा तो लेना चाहिए। आजमाने से पहले ही आप सवाल पूछने लग गए कि साहब ये कैसे हो सकता है। अधर्म के मामले में आदमी प्रश्न नहीं पूछता है जब अधर्म धर्म के नाम पर बिकता है क्योंकि उसकी स्वतन्त्रता ही छीन ली जाती है। इसके बारे में परसों बताऊंगी, इस बात को मैं कह रही हूँ कि जब आदमी पूरी

तरह से impulsement में आ जाता है तो वह सवाल ही पूछना भूल जाता है और सहजयोग आपकी पूर्ण स्वतन्त्रता को स्वीकार ही नहीं उसका गौरव करती है, क्योंकि आपको स्वतन्त्रता देना ही सहजयोग का कर्तव्य है। गर आप परतंत्र पहले से ही हों तो आपको स्वतन्त्रता देने से फायदा? लेकिन स्वच्छन्दता और स्वतन्त्रता में बहुत बड़ा अन्तर है, इसको समझ लेना चाहिए। स्वतन्त्रता मनुष्य के wisdom, सुबुद्धि से आती है। बहकावे में न आएँ अपना भला करना है न, अपना कल्याण करना है न। बस हमको किसी से क्या मतलब, हमको किसी से क्या लेना-देना? किसी की बात से क्या करना, फलाने ने ऐसा लिखा था, ढिकाने ने ऐसा लिखा था, ढिकाने ने ऐसा कहा था। उससे क्या मतलब? हमको अपना मतलब है। हमको ठीक होना है, हमको ध्यान करना है।

ध्यान में बैठो तो लोग कहते हैं (माताजी

हमें ठीक कीजिए)। लेकिन जड़ से ही मैं कहती हूँ, सारी बीमारी छूट जाएगी। जड़ से ही सारा अज्ञान जिससे मिट जाए उसको क्यों नहीं अपनाते आप? जड़ से ही जो अन्धकार है वो कहीं खत्म हो जाए उसको क्यों नहीं जलाते आप। अभी हम सब लोग थोड़ी देर ज़रूर ध्यान में जाएंगे, कृपया एक आधे घण्टे के लिए आपके पास time हो तो आप बैठे रहिएगा, बीच में उठिएगा नहीं, जिनको जाना है पहले ही चले जाएं। आधा घण्टा कम से कम लगेगा और जिसको जाना हो कृपया पहले चले जाएं क्योंकि किसी को सिनेमा जाना है, किसी को बड़े-बड़े काम करना है, किसी को बालरूम डान्स में जाना है, सबलोग चले जाएं। ऐसे लोगों का सहजयोग नहीं है। जिन लोगों को परमात्मा को पाना हो वो लोग बैठें और इसको पाएं लेकिन कम से कम आधा घण्टा शान्तिपूर्वक आप अपना समय दें, बाकी आपके सारे कार्य होते ही रहेंगे।